ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
ISSN No.: 2347-2944, RNI:UPBIL04292, REG. No.: 561/2013-2014 Vol.-1, No.-1, PP-344-347, YEAR-2014

महाकवि कालिदासकृत रघुवंश महाकाव्य में बिम्बविधानः एक विचार

❑ डॉ0 आशा रानी वर्मा

सार– *यद्यपि अभी तक कालिदास को ध्यान में रखकर भारतीय वाङ्मय में जितना कुछ कहा गया है उससे यह प्रतीत होता है कि कालिदास के विषय में कहने के लिए कुछ शेष नहीं बचा है। तथापि समीक्षा सिद्धांत की इस नई कसौटी पर कालिदास की रचनाओं को समझने का एक नूतन प्रयास है। जहां तक 'बिम्ब' शब्द के अर्थ का बोध का प्रश्न है वह अंग्रेजी के 'इमेज' का हिंदी रूपांतर है।*

प्रस्तुत शोध पत्र में इसी बिम्ब विधान के आधार पर कालिदास के रघुवंश व महाकाव्य यथामति एक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

बिम्ब से सम्बन्धित पाश्चात्य तथा भारतीय विद्वानों कीमतों में कोई विशिष्ट अंतर दृष्टिगोचर नहीं होता तथापि'बिम्ब' शब्द के प्रति भारतीय विद्वानों के विचारों से अवगत होना परमावश्यक है। भारतीय शब्दकोशों बिम्ब के कई अर्थ हैं:– जैसे प्रतिच्छाया, प्रतिबिंब, सूर्य, आभास,चंद्रमंडल, प्रतिमा बिम्ब ,कमंडलु,आईना, छायाफल,झलक, आभास इत्यादि। सामान्य रूप से बिम्ब का प्रयोग तीन अर्थों में देखा गया है– प्रतिमा के अर्थ में, या छाया के अर्थ में तथा फल विशेष के अर्थ में। पाश्चात्य कोशों में केवल बिम्ब फल के अर्थ में इस का प्रयोग नहीं दिखता है। डॉ० केदारनाथ सिंह बिम्ब के स्वरूप को इस तरह परिभाषित किया है:–"काव्यगत बिम्ब वह शब्दचित्रहै, जो संवेग और वासना से उत्पन्न होता है तथा जो ऐन्द्रिय गुणों से अनिवार्य रूप से समन्वित रहता है। इस तरह बिम्ब निर्माण हेतु काव्य बिंब को शाब्दिक चित्र संवेग और वासना से युक्त और ऐन्द्रियता को अनिवार्य तत्व के रूप में माना गया है"।

पाश्चात्य साहित्य के संदर्भ में बिंब का प्रयोग अंग्रेजी के इमेज शब्द के पर्याय के रूप में हुआ है। वस्तुतः कला का निर्माण की बिम्ब रचना है। काव्य बिंब का गूढ़ तथा विस्तृत विवेचन यूरोपीय साहित्य में प्राप्त होता है। कुमारी एडिथ रेकर्ड ने बिंब के स्वरूप को इस प्रकार व्याख्यायित किया है– "बिंब एक मानसिक चित्रहै, जिसका निर्माण अनुभूतियों के आधार पर होता है। पूर्व में कभी देखी गई,स्पर्श की गई, अथवा सूंघी गई वस्तु का वर्णन शब्दों के माध्यम से इस तरह करना कि किसी मस्तिष्क में एक चित्र निबंधित हो जाए वही बिंब कहा जाता है"। रोवर्ट काफिन कहते हैं कि कविता में सर्वोत्कृष्ट तथा जीवंत बिंब वही होता है जिसका अनुभव हम इंद्रियों के माध्यम से करने में समर्थ होते हैं। इस प्रकार विद्वानों के मतों का अवलोकन करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि बिंब के स्वरूप के विषय में प्रायः पाश्चात्य और भारतीय दोनों के विचार परस्पर मिलते–जुलते हैं। इसलिए यह कहा जा सकता है कि बिम्ब कोई पदार्थ नहीं है अपितु रचनाकार की मानसिक प्रतिच्छवि है। वह कोई मूल सृष्टि नहीं है, अपितु भावनात्मक पुनः सृष्टि है। इंद्रिय सन्निकर्ष के द्वारा रचनाकार के मानसिक क्षितिज पर प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप में जो भाव चित्र विनिर्मित होते हैं, उसे बिंब कहते हैं। इसका सशक्त माध्यम शब्द और अर्थ ही है। यह सत्य है कि प्रत्येक शब्द का अर्थ अपने आप में एक बिंब ही होता है।

महाकवि कालिदास संस्कृत साहित्य के सर्वतो मान्य वदान्य महाकवि हैं। वे भारतीय संस्कृति

एसो0 प्रोफेसर– संस्कृत विभाग, नेशनल पी.जी. कॉलेज, भोगाँव– मैनपुरी (उ0प्र0), भारत

एवं संस्कृत काव्य परंपरा की एक उज्ज्वल विभूति के रूप में अमर है। ऐसा कोई नहीं है जिसने कालिदास और उनकी कृतियों के विषय में कुछ भी ना लिखा हो। मल्लिनाथ से लेकर रवींद्रनाथ की समीक्षा परंपरा तक कालिदास कृतियों का चिंतन मनन हुआ है। रघुवंश महाकाव्य महाकवि कालिदास की एक उत्कृष्ट काव्य रचना है। इस महाकाव्य में महाकवि ने रघुवंशीय राजाओं के उदात्तशील एवं चरितावलियों का काव्यमय उपनिबंधन प्रस्तुत किया है। इसी महाकाव्य में रघुवंशीय राजाओं के उन्तीस पीढ़ियों का वर्णन प्राप्त होता है। इस प्रकार इसे सूर्यवंश का सबसे बड़ा इतिहास प्रबंध कहा जा सकता है। प्रारंभिक श्लोकों में महाकवि ने रघुवंशीय राजाओं के जिन विशिष्ट गुणों का वर्णन किया है वे अपने आप में महत्तम हैं।काव्य को रससंवेद्य उदात्त तथा महान बनाने हेतु कवि ने जिन साधनों का उपयोग किया है, उनमें उनका कलात्मक बिंब विधान अन्यतम है। प्रस्तुत प्रसंग में बिंब विधायिनी प्रतिभा का विवेचन 'रघुवंश' महाकाव्य को दृष्टिगत रखकर किया जा रहा है।

रघुवंश महाकाव्य का अध्ययन करनेसे ज्ञात होता है कि महाकवि कालिदास बड़े ही भावुक तथा सहृदयी हैं। उनकी कल्पना शक्ति अत्यधिक प्रखर तथा बुद्धि भी तीक्ष्ण है। इनकी शब्दाभिव्यक्ति इतनी प्रबल है कि वे किसी पूर्व में देखे गए विषय को तदनुरूप उपस्थापित कर देते हैं। रघुवंश महाकाव्य मेंप्राप्तबिम्बों को निम्नलिखित रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है।

नीचे दिए गए प्रस्तुत श्लोक में गौ सेवा का बिम्ब हमारे आंखों के समक्ष चित्रित हो जाता है। सुबह होते ही सुदक्षिणा द्वारा नंदिनी का रोली, माला आदि से पूजन करना तथा दुग्ध पान के पश्चात् जिसका बछड़ा बांध दिया गया है, ऐसी गौ को वन में चराने हेतु राजा के द्वारा खोला जाता है। इसका जीवंत रूप हमारे आंखों के समक्ष चित्रित हो जाता है। महाकवि ने यहां अप्रस्तुत योजना के द्वारा बिंब को प्रस्तुत किया है सुदक्षिणा के द्वारा की गई गोपरिक्रमा का बिंब अतिसुंदर है:–

प्रणम्य चानर्च विशालमस्याःश्रृगारन्तरं द्वारमिववार्थसिद्धेः।

प्रदक्षिणीकृत्य पयस्विनी तां सुदक्षिणा साक्षात्पात्रहस्ता।।

सायं समय नन्दिनी जब प्रत्यावर्तित होकर आश्रम में प्रवेश करती है, तब सुदक्षिणा अपने हाथों में लिए गये अक्षतों से सम्पूरित पात्र से पौष्टिक दुग्ध देने वाली नन्दिनी की परिक्रमा और पूजा करने के बाद उसके चौड़े, दोनों सिंहों के बीच में स्वकार्य की सिद्धि के लिए द्वार की तरह नन्दिनी की अर्चना करती है। विहार करने के उपरांत जब श्रीराम जाते हैं, तब गोदावरी के चंचल लहरों के स्पर्श से होकर प्रवाहित होने वाली शीतल हवा श्री राम के थकान को दूर कर देती है, तब श्री राम सीता के गोद में सिर रख कर सो जाते हैं–

रहस्त्वदुत्सर्गनिषण्णमूर्धा स्मरामि वानीरगृहेषु सुप्तः।

अत्रानुगोदमृगयानिवृत्तस्तरंगवातेन विनीतखेदः।।

इस पद्य में मिश्रित बिंब की सर्जना अद्वितीय है। सबसे पहले श्री राम के मृगया विहार कराने का चाक्षुष बिम्ब हमारे आंखों के समक्ष रूपायित होता है, तदुपरान्त गोदावरी के स्पर्श से होकर प्रवाहित होने वाली शीतलता का स्पर्श बिंब तथा सीता के गोद में सिर रखकर सोए हुए स्पर्श का बिंब हमारे मानस पटल पर छा जाता है। जिस प्रकार समुद्र मंथन के बाद चंद्रमा की प्राप्ति हुई थी जिसे प्रभु शिव शंकर ने अपने मस्तक पर धारण किया था। उसी प्रकार राजा दिलीप वैवस्वत मनु की परंपरा में क्षीरसमुद्र से निकले चंद्रमा की भांति पैदा हुए। यह भी पौराणिक बिंब के रूप में अवलोकनीय हैय–

दिलीपेति राजेन्दुरिन्दक्षीरनिधाविव।

तदन्वये शुद्धिमति प्रसूतः शुद्धिमक्षरः।।

प्रस्तुत श्लोक में इस उपमान के द्वारा चंद्रमा की आह्लादकता और लोकप्रियता आदि समस्त गुण राजा दिलीप में अनायास ही संक्रमित हो जाते हैं, किंतु साथ ही समुद्र मंथन की कथा से अन्वित होकर

मन में चिरकाल से प्रतिष्ठित परंपरागत श्रद्धेय भाव उद्दीप्त हो जाते हैं। इसी प्रथम सर्ग में राजा दिलीप ने गौरूपी पृथ्वी को षष्ठांश रूप ग्रहण कर दुहा और इन्द्र ने धान्य की वृद्धि करने के लिए स्वर्ग को वृष्टि द्वारा दुहा।वेदों में भी धरती को गौमाता की संज्ञा दी गई है। यहां उपमान के द्वारा कवि ने हमारे इसी सुषुप्तभाग को प्रकाशित किया है। इसे भी पौराणिक बिंब कहा जा सकता है । रघुवंश के पंचम सर्ग में महाकवि कालिदास द्वारा हाथी की अल्हड़ मस्ती और भयानक रूप का वर्णन प्राकृतिक बिंब के रूप में देखने योग्य हैय–

बभौ स भिन्दन्बृहतस्तरंगान्वयर्गलाभांग इव प्रवृत्तः।

संहारविक्षेपलघुक्रियेण हस्तेन तीराभिमुखः सशब्दम्।।

संकोच और प्रसारण की क्षिप्रता के व्यस्त अपनी सूंड़ से शब्द सहित तरंगों को चीरता हुआ तट की ओरजाते समय वह ऐसा दिख रहा था जैसे वह अपनी बंधन अर्गला को तोड़ने की चेष्टा कर रहा हो। महाकवि कालिदास ने स्पर्श बिंब का अत्यंत ही मनोहारी वर्णन किया है। कुमार अज के विवाह का प्रसंग है। इंदुमती का अशोक लता के नव पल्लव के समान, अंगुलियों को अज ने आम्र के नवा पल्लव के समान ताम्रपर्णी तलहथियों में जब पकड़ा दिया जाता है उस समय दोनों वर और वधू को एक अपूर्व स्पर्श सुखानुभूति होती है। कुमार अज का प्रकोष्ठ रोमांचित हो जाता है तथा कुमारी इंदुमती की अंगुलियां पसीने से सराबोर हो जाती हैं, मानो परस्पर एक दूसरे के साथ स्पर्श ने वर वधू की काम वृत्ति को समान मात्रा में वितरित कर दिया होः– **तस्मिन्द्वये तत्क्षणमात्मवृत्तिःसर्वविभक्ते वह मनो भवेत।**

आसीद्वरःकण्टकिटप्रकोष्ठः स्विन्नांगुलिः संववृते कुमारी।।

उंगलियों का पसीजना संभोग श्रृंगार का सात्विक अनुभव है। अत एव यह स्पर्श सुख रति सुख के समान ही अत्यंत सान्द्र एवं गंभीर है। महाकवि ने यहां पसीने के द्वारा स्पर्श सुख की आन्तरिक अनुभूतियों को मूर्तिमान कर दिया है। स्पर्श सुख के भी अनेक प्रकार है, उनमें पुत्र के राजा की मात्र संसर्ग से उत्पन्न आनन्दानुभूतियों का चित्रण भी अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

राजा दिलीप ने कई दिनों तक पुत्र का नहीं देखा। गुरु वशिष्ठ की कृपा नंदिनी की सेवा के कारण आज उन्हें पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई है। ऐसे चिर अभिलषित पुत्र को प्रथम बार गोद लेते ही राजा की आंखें हो जाती है। पुत्र के शरीरजन्यस्पर्श सुखों को वे अमृत द्रव के समान श्रुत्र अनुभव कर रहे हैं। राजा दिलीप और सुदक्षिणा गुरु वशिष्ठ के आश्रम में सायं कालीन अनुष्ठान के पश्चात्अरुंधती के द्वारा सेवित तपोनिधि वशिष्ठ को देखा, जैसे स्वाहा से सेवित अग्नि हो,यहपौराणिक बिंब के रूप में दर्शन करने योग्य हैः–

अन्वासितमरुन्धत्या स्वाहमेव हविर्भुजम्।

विधेःसायन्तनस्यान्ते सद्दर्श तपोनिधिम्।।

प्रस्तुत बिंब में अरुंधती से अन्वासित तपोनिधि वशिष्ठ से स्वाहा से सेवित अग्नि की तरह दिखाई पड़ रहे हैं। अरुंधती और वशिष्ठ का युग्म रूप स्वाहा और अग्नि देवता के समान प्रतीत हो रहा है। वशिष्ठ और अरुंधती का पौराणिक उपाख्यान पुराणों में भरा पड़ा है।

निष्कर्षत– यह कहा जा सकता है कि संस्कृत साहित्य सर्वतोभावेन समाज का दर्पण होता है। बिंब केविधान से किसी भी साहित्य में'चार–चांद' लग जाता है।

बिंब एक ऐसा प्रतीक है जो साहित्य को अपने अनुसार परिष्कृत करता है। अनेकानेक कवियों के द्वारास्व–स्व काव्यों एवं रचनाओं में बिंब का विधान नाना रूपों में सुचारु रूप से किया गया है,वह अपने आप में अद्वितीय है। महाकवि कालिदास के द्वारा रघुवंश महाकाव्य में जो बिंब विधान किया गया है,वह निश्चय ही अभूतपूर्व है। इस काव्य में महाकवि कालिदास ने अपने काव्य को रस संवेद्य, उदात्त तथा महान बनाने के लिए जिन साधनों का उपयोग किया है, उनमें उनका कलात्मक बिंब विधान उत्कृष्ट है।

'बिंब विधान' वर्तमान में ऐसा विषय है, जिससे प्रत्येक जनमानस तक सरलोपायेन ले जाने की अतीव आवश्यकता है। इस तरह प्रस्तुत शोध पत्र में रघुवंश महाकाव्य में प्राप्त कवि को बिम्ब विधायिनी प्रतिभा का उल्लेख यथामति प्रस्तुत किया गया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. संस्कृत हिंदी कोश शिवराम आप्टे।
2. बृहद हिंदी कोश सं० कालिका प्रसाद।
3. चिंतामणि प्रथम भाग 1963.
4. A Consolidated Glossary of Techni cal, सेंट्रल हिंदी डिक्शनरी, मिनिस्ट्री ऑफ एजुकेशन, भारत सरकार।
4. पलवल (भू०) सुमित्रानंदन पंत।
5. कल्पना और छायावाद डॉक्टर केदारनाथ सिंह।
6. द पिक्चर इमेज सीधी सीडी स्मूपे।
7. काव्य बिंब।
8. Shorter oxford English dictionary
9. Miss Edith record] New method for the study of literature-
10. रघुवंश महाकाव्य 2/21 ,'रघुवंश महाकाव्य 9/34.
11. रघुवंश महाकाव्य 1/8,'रघुवंश महाकाव्य 9/43.
12. रघुवंश महाकाव्य 16/11,12'रघुवंश महाकाव्य 7/69.
13. रघुवंश महाकाव्य 2/5,6'रघुवंश महाकाव्य 13/28.
14. रघुवंश महाकाव्य 1/5०,52'रघुवंश महाकाव्य 6/56.
15. रघुवंश महाकाव्य 2६1,4६42
16. रघुवंश महाकाव्य 9/36 ,'रघुवंश महाकाव्य 19/12.
17. रघुवंश महाकाव्य 14/12,'रघुवंश महाकाव्य 5/44,45.
18. रघुवंश महाकाव्य 9/26, 'रघुवंश महाकाव्य 7/22.